Marwari College, Darbhanga Date-25/04/20

Online Study Material

Subject - B.A. Part-I, Psychology (Hons)

Paper - II (Social Psychology)

Topic - Methods of Social Psychology.

Introduction:

1. Experimental Method: Introduction
* Meaning of Experimental Method
* Definition of Experimental Method
* Characteristics of Experimental Method
* Steps of Experimental method
* Merits of Lab experimental Method.
* Demerits of Lab experimental Method
* Conclusion -

Dr. Subhash Kumar Suman
Asst. Prof.
Dept. of Psychology.

Scanned with CamScanner

समाज मनोविज्ञान की पद्धतियाँ
(METHODS OF SOCIAL PSYCHOLOGY)

कोई भी विज्ञान तब तक अपने वैज्ञानिक स्तर पर टिका नहीं रह सकता जबतक वह अपने अध्ययन विषयों का कुछ निश्चित या वैज्ञानिक पद्धतियों के द्वारा अध्ययन न करे। सामाजिक मनोविज्ञान के सम्बन्ध में यही बात लागू होती है। अपनी विशिष्ट अध्ययन वस्तु के सम्बन्ध में ज्ञान का क्रमबद्ध संग्रह करने के लिए सामाजिक मनोविज्ञान ने भी सुनिश्चित कार्य प्रणाली को विकसित किया है। इस विज्ञान के विकास के आरम्भिक चरण में इस प्रकार की कार्य-प्रणाली का नितान्त अभाव था। यहाँ तक कि सर्वश्री टार्ड (Tarde), ली वों (Le Bon), रॉस (Ross) और मैक्डूगल (Mc Dougal) आदि आरम्भिक मनोवैज्ञानिकों ने भी अपने अध्ययन कार्य गें किसी वैज्ञानिक पद्धति का प्रयोग नहीं किया है। सर्वप्रथम ब्रेड ने सामाजिक मनोविज्ञान में प्रयोगात्मक पद्धति का प्रयोग किया। उसके पश्चात् धीरे-धीरे अन्य पद्धतियों को भी काम में लाया जाने लगा। परन्तु इनमें निम्नलिखित विधियाँ ही प्रमुख हैं—

1. प्रयोगात्मक विधि (Experimental Method)
2. निरीक्षण विधि (Observation Method)
3. प्रश्नावली विधि (Questionnaire Method)
4. साक्षात्कार विधि (Interview Method)।

Q.1. समाज मनोविज्ञान के अध्ययन की प्रयोगात्मक विधि के गुण और दोषों की विवेचना करें।

(Discuss the merits and demerits of Experimental method of the study of Social Psychology.)

Ans. प्रत्येक विषय अपने अध्ययन के लिए अलग-अलग विधियों का प्रयोग करता है। समाज मनोविज्ञान भी एक प्रगतिशील विज्ञान है जिसमें विषय-वस्तु के अध्ययन में परिवर्तन के साथ-साथ नयी-नयी पद्धतियों का प्रयोग किया जाता है। फिर भी समाज मनोविज्ञान की विधियाँ भौतिक विज्ञान की तरह निश्चित और वैज्ञानिक नहीं मानी जाती हैं। क्योंकि समाज मनोविज्ञान प्राणी की क्रियाओं का अध्ययन सामाजिक परिस्थितियों में करता है जिसपर अणु और तत्वों की तरह पूर्ण अधिकार नहीं रखा जा सकता। समाज मनोविज्ञान की काल्पनिक विधियों के व्यक्तिगत और अक्रमबद्ध होने के कारण इससे प्रदत्त निष्कर्षों को विश्वसनीय और सत्य नहीं माना जाता था। 1841 ई० और 1860 ई० के मध्य ब्रेडन ने सर्वप्रथम समाज मनोविज्ञान का अध्ययन प्रयोगात्मक रूप में प्रारम्भ किया। डेनिस द्वारा सामाजिक व्यवहार का मुख्य अध्यय 1917 ई० के लगभग पेल आयोबा और अन्य अमेरिकन बाल-विकास अनुसंधान संस्थाओं में किया गया। 1935 ई० के बाद जनमत जैसी आधुनिक सामाजिक समस्याओं के अध्ययन के लिए बहुत सी संस्थायें खोली गयी।

इस तरह स्पष्ट है कि समाज मनोविज्ञान में समय परिवर्तन के साथ-साथ नयी-नयी विधियों द्वारा अध्ययन किया जाने लगा है जिससे सामाजिक समस्या सम्बन्धी यथेष्ट और यथार्थ ज्ञान प्राप्त किया जा सके। समाज मनोविज्ञान में निरीक्षण विधि और प्रयोगात्मक विधि

Scanned with CamScanner

की प्रगति आधुनिक युग में तेजी से हो रही है। अत: इन दोनों विधियों का अध्ययन करना ही अधिक प्रासंगिक है।

प्रयोगात्मक पद्धति (Experimental Method) : प्रयोगात्मक विधि का अभिप्राय अवलोकन की उस विधि से है जिसमें कुछ सम्बन्धित परिस्थितियों पर नियंत्रण किया जाता है और कुछ परिवर्तनशील परिस्थितियों के प्रभाव का सामाजिक स्थिति में अध्ययन होता है। इस प्रकार के प्रयोग से हमें यह ज्ञात होता है कि किस प्रकार की परिस्थिति में व्यक्ति किस प्रकार के व्यवहार को प्रदर्शित करता है। दूसरे शब्दों में, परीक्षात्मक पद्धति का प्रयोग नियंत्रित परिस्थितियों में किया जाता है। इसे एक निर्धारित योजना के आधार पर सम्पन्न किया जाता है। मर्फी तथा न्यूकाम्ब (Murphy and Newcomb) ने प्रयोगात्मक पद्धति को स्पष्ट करते हुए लिखा है कि "प्रयोगात्मक विधि सर्वोत्तम है, यह विश्लेषण की प्राविधिक पूर्णता है। इसका प्रयोग समस्या को परिभाषित करने के बाद किया जाता है। इसकी विशेषतायें इस प्रकार व्यवस्थित है ताकि हम जान जाते हैं कि किन बातों को व्यवस्थित किया और मापा जा सकेगा।"

प्रयोग विधि समस्त भौतिक विज्ञानों में प्रयुक्त होती है तथा इसका महत्व यह है कि यह ज्ञान को विज्ञान का स्वरूप देता है। मर्फी तथा न्यूकॉम्ब ने लिखा है—"प्रयोगात्मक सर्वोत्तम विधि है तथा विश्लेषण की प्राविधिक पूर्णता है।"

इसी प्रकार **करलिंगर** (Kerlinger 1964, 1986) ने कहा है, "प्रयोगशाला-विधि एक वैज्ञानिक अध्ययन है जिसमें सभी अथवा लगभग सभी ऐसे सम्भव प्रभावशाली स्वतंत्र चरों को न्यूनीकरण कर दिया जाता है जो अनुसंधान की तात्कालिक समस्या के अनुकूल नहीं होते हैं।" *(A laboratory experiment is a research study in which the variant of all or nearly all of the possible influential independent variables not pertinent to the immediate problem of the investigation is kept at a minimum.)* उपर्युक्त परिभाषाओं के विश्लेषण से प्रयोगशाला-विधि की कई विशेषताओं का पता चलता है—

1. प्रयोगशाला-विधि की एक मुख्य विशेषता नियंत्रण है। इस विधि में सबसे पहले अध्ययन-परिस्थिति को नियंत्रित कर लिया जाता है। इसका अर्थ यह है कि अध्ययन-विषय पर प्रभाव डालने वाले सभी स्वतंत्र चरों (प्रयोगात्मक चर के अलावा) के प्रभावों को रोक दिया जाता है।

2. इस विधि में परिचालन की विशेषता पायी जाती है। अध्ययन-परिस्थिति पूर्णत: नियंत्रित होती है। इसलिए प्रयोगकर्ता अपनी इच्छा से किसी स्वतंत्र चर को परिचारित करने में सफल होता है।

3. प्रयोग विधि में अध्ययन स्वतंत्र चर (Independent Variable) से आश्रित चर (Dependent Variable) की ओर होता है। दूसरे शब्दों में, यहाँ प्रयोगकर्ता कारण से कार्य की ओर बढ़ता है।

4. इस विधि में किसी परिकलपना की जाँच का प्रयास किया जाता है। प्रयोगकर्ता पहले एक परिकल्पना बनाता है और फिर अध्ययन द्वारा उसकी जाँच करता है। परिकल्पना या तो स्वीकृत या अस्वीकृत हो सकती है।

5. इस विधि में परिशुद्धता या यथार्थता अधिक और लचीलापन (Flexibility) बहुत कम पाया जाता है।

प्रयोग विधि के विभिन्न चरण (Steps) : प्रयोग विधि के विभिन्न चरण निम्न हैं—

1. किसी समस्या का उत्पन्न होना : जबतक कोई समस्या स्पष्ट रूप से उत्पन्न

Scanned with CamScanner

नहीं होती तबतक प्रयोग विधि शुरू नहीं हो सकती है। प्रयोग विधि का यह प्रथम चरण है।

2. उपकल्पना का निर्माण : समस्या के स्पष्ट होने के पश्चात् एक उपकल्पना बनायी जाती है।

3. स्वतंत्र तथा आश्रित चरों को अलग-अलग करना : उपकल्पना में दो प्रकार के चर होते हैं—(i) आश्रित चर, तथा (ii) परिवर्तनशील चर। इन दोनों चरों को अलग-अलग कर लिया जाता है।

4. परिस्थितियों का नियंत्रण : प्रयोग में सही निष्कर्ष प्राप्त करने के लिए अनावश्यक परिस्थितियों का नियंत्रण किया जाता है। इस स्थिति में केवल उपकल्पना के अन्तर्गत स्वीकार किये गये कारक के प्रभाव को ही स्वतंत्र रखा जाता है।

5. प्रयोग द्वारा प्राप्त फल का विश्लेषण : इसके लिए सांख्यिकीय सूत्रों की भी सहायता ली जाती है। इस विश्लेषण के ही आधार पर सामान्य निष्कर्ष प्राप्त किये जाते हैं।

6. उपकल्पना की जाँच : इस अन्तिम चरण में प्रयोग द्वारा प्राप्त निष्कर्ष की तुलना निर्धारित उपकल्पना से की जाती है। यह तुलना उपकल्पना की जाँच के लिए की जाती है। यदि प्रयोग द्वारा प्राप्त निष्कर्ष तथा पूर्व निर्धारित उपकल्पना एक ही होते हैं तो उपकल्पना को ही सही मान लिया जाता है। इससे भिन्न होने पर उपकल्पना को गलत मानना चाहिए तथा छोड़ देना चाहिए।

प्रयोगशाला-विधि के गुण (Merits of Lab-experiment Method)

समाज मनोविज्ञान की प्रयोगशाला विधि अधिक उपयोगी है। इस विधि में कुछ ऐसे गुण हैं जो दूसरी विधियों में नहीं पाये जाते हैं, ये निम्न हैं—

1. नियंत्रण (Control) : समाज-मनोविज्ञान की इस विधि में एक मौलिक गुण यह है कि यहाँ प्रयोगात्मक अध्ययन पूर्ण नियंत्रित परिस्थिति में किया जाता है। प्रयोगकर्त्ता ऐसे चरों के प्रभाव को रोक देता है, जिनके प्रभाव को तात्कालिक अध्ययन-विषय पर देखने का अभिप्राय नहीं होता है और केवल उस चर या चरों के प्रभाव को नहीं रोकता है जिन्हें उस अध्ययन-विषय पर देखने का अभिप्राय होता है। पहले प्रकार के चरों को नियंत्रित चर (Controlled variables) और दूसरे चर या चरों को प्रयोगात्मक चर (Experimental variables) कहते हैं। इस नियंत्रण के कारण अध्ययन की विश्वसनीयता (reliability) बढ़ जाती है।

2. परिचालन (Manipulation) : इस विधि में प्रयोगकर्त्ता अपनी इच्छा के अनुसार किसी स्वतंत्र चर को परिचालित करने में सफल होता है। अध्ययन-परिस्थिति पूर्णत: नियंत्रित होती है। इसलिए प्रयोगकर्ता को किसी चर को परिचालित करने में सुविधा होती है। यह गुण किसी दूसरी विधि में पर्याप्त मात्रा में नहीं पाया जाता है।

3. यथार्थता या परिशुद्धता (Precision) : इस विधि में यथार्थता या परिशुद्धता का गुण भी उपलब्ध है। इसका अर्थ यह है कि वातावरण के पूर्णत: नियंत्रित होने के कारण प्रयोगात्मक कार्य-विधि में अशुद्धि-विचलन (Error variance) कम होती है और शुद्धता एवं निश्चितता अधिक होती है। यह गुण भी इतनी मात्रा में किसी दूसरी विधि में नहीं पाया जाता है।

4. पृथकीकरण (Isolation) : समाज-मनोविज्ञान की प्रयोग विधि में पृथकीकरण का गुण पाया जाता है। इसका अर्थ यह है कि यहाँ प्रयोगकर्ता कई स्वतंत्र चरों में से किसी एक चर को अलग करके उसके प्रभाव को अध्ययन-विषय पर देख सकता है। करलिंगर (Kerlinger, 1964) के अनुसार, प्रयोगशाला प्रयोग का यह एक महत्वपूर्ण गुण है जो इसे एक श्रेष्ठ विधि बना देता है।

Scanned with CamScanner

5. पुनरावृत्ति (Repetition) : इस विधि में पूर्ण नियंत्रण होने के कारण प्रयोगात्मक अध्ययन को बार-बार दुहराना सम्भव होता है। प्रयोगकर्ता बारम्बार उसी तरह की प्रयोगात्मक परिस्थितियों को उत्पन कर अपने प्रयोग को दुहराता है और परिणामों की स्थिरता (Stability) की जाँच करता है। दूसरी विधियों में नियंत्रण के अभाव अथवा आंशिक नियंत्रण होने के कारण पुनरावृत्ति कठिन हो जाती है।

6. उच्च आंतरिक वैधता (High Internal Validity) : सियर्स आदि (Sears et al; 1991) के अनुसार, प्रयोगशाला-प्रयोग में उच्च आंतरिक वैधता का गुण पाया जाता है। कारण, यहाँ आश्रित चर के रूप में जिन प्रभावों का अध्ययन किया जाता है, वे वस्तुत: प्रयोगकर्ता द्वारा परिचालित करने के परिणाम होते हैं।

7. प्रमाणीकरण (Verification) : इस विधि में कठोर नियंत्रण होने के कारण एक प्रयोगकर्ता द्वारा प्राप्त परिणामों की जाँच दूसरे प्रयोगकर्ता द्वारा सम्भव होती है। प्रमाणीकरण की इतनी अधिक सम्भावना किसी दूसरी विधि में नहीं है।

8. विश्वसनीयता (Reliability) : प्रयोगशाला विधि की विश्वसनीयता दूसरी विधियों की अपेक्षा अधिक है। कारण, इस विधि में पूर्ण नियंत्रण सम्भव होता है जबकि दूसरी विधियों में या तो नियंत्रण सम्भव नहीं होता है या केवल आंशिक नियंत्रण रहता है।

प्रयोगशाला-प्रयोग विधि के दोष या सीमाएँ
(Demerits or Limitations of Lab-experiment Method)

समाज-मनोविज्ञान की प्रयोगशाला प्रयोग-विधि में उपर्युक्त गुणों के होते हुए भी निम्नलिखित दोष पाये जाते हैं—

1. लचीलापन का अभाव (Lack of Flexibility) : इस प्रयोग विधि में यथार्थता (Precision) अधिक होने के कारण लचीलापन का अभाव हो जाता है। प्रयोगकर्ता के लिए यह सम्भव नहीं होता है कि वह आवश्यकता अनुसार अपनी कार्यविधि में परिवर्तन लाये।

2. कृत्रिमता (Artificiality) : इस विधि में कठोर नियंत्रण होने के कारण परिस्थिति कृत्रिम (Artificial) तथा अस्वाभाविक (Unnatural) बन जाती है। ऐसी परिस्थिति में अध्ययन करके प्राप्त होने वाले परिणाम संदिग्ध (doubtful) हो जाते हैं।

3. वास्तविकता का अभाव (Lack of realism) : इस प्रयोग-विधि में कठोर नियंत्रण होने के कारण अध्ययन-परिस्थिति अस्वाभाविक तथा कृत्रिम बन जाती है। दूसरे शब्दों में, अध्ययन-परिस्थिति की वास्तविकता घट जाती है। अत: अध्ययन तथा प्राप्त परिणाम की वास्तविकता भी घट जाती है।

4. सीमित क्षेत्र (Limited Scope) : इस प्रयोग-विधि का क्षेत्र बहुत सीमित है। इसके द्वारा सभी सामाजिक समस्याओं का अध्ययन संभव नहीं है, क्योंकि सभी सामाजिक परिस्थितियों पर पूरा नियंत्रण हासिल करना सम्भव नहीं है।

5. जटिल सामाजिक समस्याओं के लिए अनुपयुक्त (Inappropriate for complex Social Problems) : समाज मनोविज्ञान की दृष्टि से इस विधि का एक गम्भीर दोष यह है कि इसके द्वारा जटिल सामाजिक समस्याओं का अध्ययन सम्भव नहीं है। करलिंगर (Kerlinger, 1964) ने कहा है कि समूहों की गतिकी (Dynamics) तथा पारस्परिक क्रिया, आदि समस्याओं के अध्ययन में प्रयोगशाला प्रयोग-विधि सफल नहीं है।

6. प्रयोज्य-पक्षपात (Subject bias) : प्रयोगात्मक विधि के परिणामों पर प्रयोज्य-पक्षपातों का भी प्रभाव पड़ता है। प्रयोज्य यह जानता है कि वह प्रयोग या शोध का एक अंग है। इसलिए वह जानबूझकर सही प्रतिक्रिया या वांछित प्रतिक्रिया प्रकट करने का प्रयास करता है।

7. प्रयोगकर्ता-पक्षपात (Experimenter bias): इस विधि से प्राप्त परिणामों पर प्रयोगकर्ता के व्यक्तिगत पक्षपातों का प्रभाव पड़ सकता है।

Scanned with CamScanner